पंजाब केसरी, 26.6.14

स्किन की बीमारी देने वाले 36 जीन्स खोजे

संयुक्त राष्ट्र के वैज्ञानिक डा. यान वैल ने कहा जीन्स की खोज ने इलाज को दी नई दिशा

चंडीगढ़, 25 जून (अर्चना सेठी): रिसर्च की दुनिया में 36 जीन्स की खोज की गई है जो लोगों में स्किन की बीमारी की वजह बनते हैं। कड़ी रिसर्च के बाद इन जीन्स को पहचाना जा सका है। पहले यह जीन्स विज्ञान की दुनिया के लिए पहेली बने थे। जीन्स को पॉलीजीन्स कहा जाता है। जीन्स की खासियत यह है कि यह व्यक्ति के शरीर में मौजूद डी.एन.ए में अपनी संरचना बदल लेते हैं। बदली संरचना जीन्स को सामान्य तौर पर काम नहीं करने देती और व्यक्ति के वे सैल्स जो बाहरी कीटाणुओं से शरीर को बचाते हैं खुद अपने ही शरीर पर धावा बोल देते हैं। नतीजन व्यक्ति की रोग प्रतिरोध क्षमता प्रभावित हो जाती है। शरीर के अपने सैल्स उन मेलेनोसाइट सैल्स का खात्मा कर देते हैं जो स्किन को रंग देते हैं। मेलेनोसाइट सैल्स का खात्मा ऐसे लोगों को विटिलिगो (फुलवैहरी) की बीमारी दे देते हैं। संयुक्त राष्ट्र की प्रयोगशाला में वैज्ञानिकों ने न सिर्फ स्किन डिसीज देने वाली इन जीन्स को खोजा है बल्कि ऐसी दवा भी इजाद करने में सफलता पाई है जो स्किन की इस बीमारी को जड़ से काट सकेगी।

यह होता है स्किन डिसीज : स्किन पर होने वाली विटिलिगो बीमारी के कारण स्किन में मेलैनोसाइट की कमी होती है। रिसर्च के मुताबिक स्किन में मौजूद मैलेनोसाइट सैल्स को जब व्यक्ति के शरीर के टी-सैल्स ही खत्म

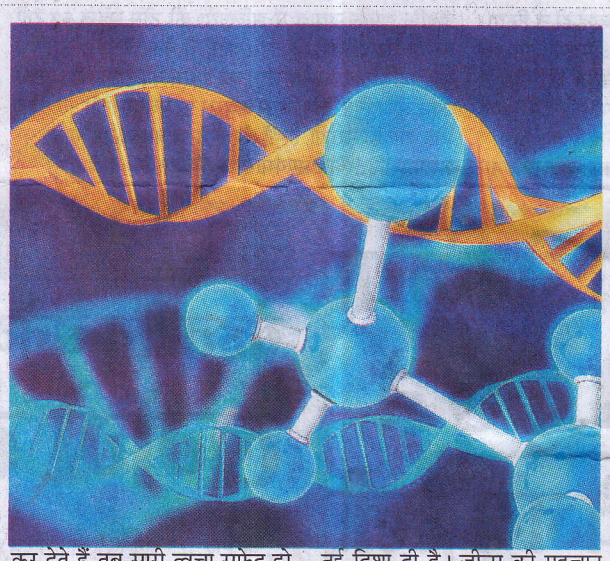

कर देते हैं तब सारी त्वचा सफेद हो जाती है। त्वचा के जिस हिस्से से सैल्स गायब होते हैं वहां-वहां पैची व्हाइट लेयर्स बन जाती हैं। फुलवैहरी को जहां यूवी किरणें बढ़ाती हैं वहीं इसका इलाज यू.वी. किरणों, फोटोथैरेपी, लेजर थैरेपी व सर्जरी से किया जाता है।

दस इंजैक्शन बनेंगे रामबाण, पी.जी.आई. पेशैंट्स को मिलेगा आराम : संयुक्त राष्ट्र के वैज्ञानिक डा. यान वैल का कहना है कि स्किन के मैलेनोसाइट्स के खात्मे की वजह पहले नहीं मालूम थी। कुछ लोग इसे रंग और त्वचा की किस्म से जोड़ देते थे परंतु जीन्स की खोज ने इलाज को नई दिशा दी है। जीन्स की पहचान के बाद ऐसी दवा तैयार की गई है जिसने सैंकड़ों लोगों में फुलवैहरी की यह बीमारी फैलने से रोक दिया है। इस दवा के दस इंजैक्शन एक दिन के अंतराल पर पेशैंट्स को लगाए जाते हैं और इससे उनकी रोग प्रतिरोध क्षमता बढ़ जाती है और जीन्स की बदली संरचना का असर खत्म हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र में इसके तीन क्लीनिक ट्रायल में सफलता मिलने के बाद विभिन्न देशों में फुलवैहरी के इस इलाज का जानकारी दी गई है और पी.जी.आई. के इस दौरे के बाद अब यहां भी यह इलाज मिल सकेगा। दस इंजैक्शन के बाद फुलवैहरी की रोकथाम होते ही खराब स्किन को सर्जरी या लेजर से बदला जा सकता है।

गोरा बनने की चाह भी देती है फुलवैहरी : वैज्ञानिक डा. यान वेल ने कहा की कुछ लोगों यह स्किन रोग लोशन व क्रीम के प्रयोग से भी होती है। गोरा बनाने वाली क्रीम में मौजूद पदार्थ स्किन के लिए कई बार घातक साबित होते हैं।

यह क्रीम कुछ लोगों में फुलवैहरी ट्रिगर करने का काम करती हैं। डा. वेल का कहना है कि घरों में मौजूद रासायनिक पदार्थों का प्रयोग महिलाओं को दस्ताने पहन कर करना चाहिए। बर्तन, कपड़े आदि साफ करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला पाऊडर या किचन क्लीनर को हाथ नहीं लगाने चाहिए यह भी स्किन डिसीज को ट्रिगर करते हैं।

इटली के वैज्ञानिक डा. टोरेलो लोटी ने कहा कि कुछ वायरस ऐसे भी होते हैं जो स्किन को यह बीमारी देते हैं। रोम के दो प्रतिशत लोगों को वायरस की वजह से विटिलिगो होती है। भारतीयों को रोम से ज्यादा विटिलिगो नहीं होती परंतु भारतीयों की त्वचा का रंग ऐसा होता है जिस पर फुलवैहरी ज्यादा दिखती है। पी.जी.आई. के स्किन रोग विशेषज्ञ डा. देविंद्र प्रसाद ने कहा की आमतौर पर स्किन की 6 किस्में होती हैं। रंग के आधार पर किस्म तय की जाती है। पेशैंट की स्किन को बीमारी ने कितना प्रभावित किया है इस आधार पर इलाज किया जाता है।